SJIF 2013 = 1.795
An International Peer Reviewed & Referred
Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अनुवाद : स्वरूप विवेचन

निलकंठ गिरि , Ph.D.

Abstract

अनुवाद का अर्थ है, एक भाषा में व्यक्त विचारों को दुसरी भाषा में व्यक्त करना, लेकिन यह कार्य इतना आसान नहीं है। हर भाषा विशिष्ट परिवेश में पनपती है। उसकी अपनी ध्वन्यात्मक, शाब्दिक, रूपतामक, काव्यात्मक, आर्थिक लोकोक्तिविषयक आदि अनेक निजी विशेषताएँ होती है। इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि स्त्रोत भाषा की पूर्णतः समान अभिव्यक्ति से अभिप्राय यह है कि स्त्रोत भाषा की रचना को सुन या पढ़कर लक्ष्य भाषा–भाषी ठीक वहीं अर्थ ग्रहण करे, जो मूल पाठ का पाठक ग्रहण करता हो। अनुवाद का स्वरूप किस प्रकार होना चाहिए इस संदर्भ में अनुवाद चिंतक गोपालराय जी स्पष्ट करते है कि ''अनुवाद का स्वरूप विभिन्न विधाओं के अनुसार बदलता रहता है। मूल उद्देश्य तो एक ही होता है अर्थात मूल रचना के कथ्य, संवेदना, प्रभाव आदि को उसी रूप में लक्ष्य भाषा में पुराभिव्यक्त कर देना, परंतु विधाओं की प्रकृति के अनुसार अपेक्षित समंजन अपरिहार्य हो जाता है। ज्ञानात्मक साहित्य में कथ्य ही प्रमुख होता है, अतः अनुवाद अपेक्षाकृत वस्तुनिष्ठ और आसान होता है। पर सर्जनात्मक साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का स्वरूप बदल जाता है। वह वस्तुनिष्ठ न रहकर काफी हद तक आत्मनिष्ठ हो जाता है। सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद की नहीं कर सकता।''

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com 4.194, 2013 SJIF© SRJIS2014

गोपालराय जी के उक्त मतानुसार अनुवाद का स्वरूप निश्चित रूप से विधागत होता है। अतः विधा की प्रकृति के अनुसार अनुवाद में भी अपेक्षित सामंजस्य स्थापित करना अनिवार्य हो जाता है। इसमें अनुवादक मूल का कथ्य, उसकी संवेदना तथा प्रभाव को ध्यान में रखते हुए पुनः सर्जन करता है। यह पुनः सर्जन ज्ञानात्मक साहित्य के समान वस्तुनिष्ठ और सरल न होकर पूर्णतः आत्मनिष्ठ और जटिल होता है। अतः सर्जनात्मक साहित्य के अनुवादक के लिए प्रतिभासंपन्न तथा सर्जक होना अनिवार्य शर्त है। ऐसा व्यक्ति ही सर्जनात्मक साहित्य के साथ न्याय कर सकता है। अनुवाद को परखने के दो संदर्भ है एक व्यापक और दूसरा सीमित। कहा जा सकता है कि व्यापक संदर्भ में ''कथ्य का प्रतिकों का अनुवाद है, तो सीमित अर्थ में कथ्य

का भाषांतर अनुवाद है। अनुवाद चिंतक डॉ. भोलानाथ तिवारी अनुवाद को प्रतीकांतर का एक भेद मानते हैं। प्रतिकांतर शब्द का अर्थ उन्होंने विशिष्ट रूप में किया है। विचार किसी–न–किसी शब्द के प्रतीक द्वारा व्यक्त किए जाते हैं। भाषा में ये शब्द प्रतीक होते हैं। इस प्रकार चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला, आदि में भावों या विचारों की अभिव्यक्ति के लिए तरह–तरह के प्रतीकों का प्रयोग होता है। इन प्रतीकों का परिवर्तनकी प्रतीकांतर है। एक प्रतीक या प्रतीक वर्ग के द्वारा अभिव्यक्ति प्रतीकांतर है। प्रतीकांतर तीन प्रकार से होता है– शब्दांतर, माध्यमांतर और भाषांतर। किसी भाषा में व्यक्त विचारों को उसी भाषा में, दुसरे शब्दों में व्यक्त करना 'शब्दांतर' है। जैसे– श्रीमान पधारिए जनबे अली तशरीफ रखिए।'

एक माध्यम के प्रतीकों के स्थान पर दुसरे माध्यम के प्रतीकों का प्रयोग करना 'माध्यमांतर' है। जैसे चित्रकार के द्वारा भावों को चित्र में व्यक्त करना भाषांतर है। इसको 'अनुवाद' या 'तर्जुमा' आदि कहते है। शब्दार्थ चिंतामणी के अनुसार ज्ञात अर्थ को पुनः प्रतिपादित करना अनुवाद है। इसी प्रकार 'जो अर्थ प्राप्त है' अर्थात पहले कहा गया है उसका पुनः कथन ही 'अनुवाद' है। अनुवाद में एक बार कहे गए कथन को फिर से कहना या पुनरूक्ति होती है। अनुवाद को नेमाडे जी न द्वैभाषिक प्रक्रिया कहा है, जिसमें भाव–विचारों तथा तात्पर्य का एक भाषा से दुसरी भाषा में भाषिक–सांस्कृतिक स्थानांतरण होता है। अनुवाद में मूल के भाव की रक्षा करते हुए स्त्रोत से लक्ष्य भाषा में यथावत् समतुल्य अभिव्यक्ति का प्रयास होता है। जिसमें अर्थ को शैली से अधिक महत्व दिया जाता है। इसका समर्थन पाश्चात्य भाषावैज्ञानिक माध्यम के कथन से हो सकता है– ''स्त्रोत भाषा में कही गई बात को लक्ष्य भाषा में उसके सहज और निकटतम अर्थ देनेवाले शब्दों द्वारा व्यक्त करना अनुवाद है परंतु इसमें पहली प्राथमिकता अर्थ और दुसरी शैली को दी जानी चाहिए।'' अनुवादक मूल्य का कथ्य, संवेदना तथा पाठक पर पड़नेवाले प्रभाव को सुरक्षित रखते हुए मूल का पुनःसर्जन करता है। जो पूर्णतः आत्मनिष्ठ और जटिल होता है। अनुवाद में मूल का आशय और अर्थ ही महत्वपूर्ण होता है और शैली अपेक्षितः गौण होती है। जिसमें जोड़–घाट करने का अधिकार अनूवादक को कदापि नहीं होता। क्योंकि अनुवाद का एक स्वीकृत नियम है कि ''मूल से न्यूनाधिक न हो और भाव में भी कुछ विरोध न आए।'' (राजा लक्ष्मीणसिंह) इस संदर्भ में डॉ. हरिवंशराय बच्चन का यह मत भी सार्थक सिद्ध होता है कि ''सफल अनुवादक वही होता है जो अपनी दृष्टि भावों पर रखता है। शाब्दिक अनुवादक शुद्धता होती है और न सुंदर। भाव जब एक भाषा माध्यम को छोड़कर दुसरे भाषा माध्यम स मूर्त होता चाहेगा तो उसे अपने अनुरूप उद्बोधक और अभिव्यंजक शब्द–सारी सॅजोने की स्वातंत्रता देनी होगी। यही पर अनुवाद मौलिक सृजन हो जाता है या मौलिक सृजन की कोटि में आ जाता है।'' मूल के भाव और अर्थ को महत्वपूर्ण मानकर जब अनुवादक उसक अनुरूप शब्दसारी का चयन करते हुए अनुवाद करता है तब यह मौलिक सृजन ही होता है। अनुवाद में स्त्रोत भाषा के प्रतीकों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के कथानतः और कथ्यतः निकटतम, समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग होता है इसलिए अनुवाद में निकटतम, समतुल्य और सहज अभिव्यक्ति होती है। कैटफोर्ड ने इसी बात को कहा है कि ''एक भाषा में व्यक्त सामग्री का दूसरी भाषा में समतूल्य रूपांतरण ही अनुवाद है। दूसरे शब्दों में अनुवाद एक भाषा में पाठपरक उपादानों का दूसरी भाषा के पाठ परक उपादानों के रूप में समतुल्यता के आधार पर प्रतिस्थापना है। पाश्चात्य भाषावैज्ञानिक कैटफोर्ड तथा न्युमार्क ने अनुवाद को एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार तथा संदेश को प्रथमतः अर्थ और गौणतः शैली के आधार पर लक्ष्य भाषा में सहज, निकटतम और समतुल्य अभिव्यक्ति

देना ही अनुवाद है। ये विद्वान अनुवाद प्रक्रिया में अर्थ को प्रमुख तथा शैली को गौण मानते है। इस बात की पुष्टि में टेलर का मत द्रष्टव्य है– ''मूल तथा अनुवाद की प्रकृति के भेद के कारण यह आवश्यक हो जाता है कि मूल के अर्थ को इमानदारी से व्यक्त करने के लिए अर्थ से न हटाया जाए। इसी प्रकार यदि अभिव्यक्ति की पवित्रता के साथ मूल के अर्थ और शैली की रक्षा हो सके तो उन्हे कल्पित सहजता। अथवा अधिक शोभा के लिए बलिदान करना उचित न होगा।'' सुपरिचित पाश्चात्य विद्वान हार्टमन, स्टार्क ने अनुवाद एक प्रक्रिया या उसका परिणाम है इस सिद्धांत को प्रतिपादन किया है। इनके अनुसार स्त्रोत भाषा के प्रतिपाद्य विषय को तथ्य भाषा में स्थानांतरित करने की प्रक्रिया और उसका परिणाम ही अनुवाद है। इस संदर्भ में मराठी के विद्वान आ. पांडुरंग देशपांडे लिखते हैं– ''अनुवादक न केवल दो भाषाओं के बीच का दुत होता है वरन् दो राष्ट्रों और सभ्यताओं के बीच का भी दूत होता है, उसे उस भाषा और उसे बोलने वाले उन लोगों का पूर्ण आदर करना चाहिए जिनका वह वर्णन और विवेचन करना चाहता है। एक भाषा में जो कुछ कहा गया है, उसका दुसरी भाषा में रूपांतर करने में उसे अत्याधिक विनम्रता और कोमलता अपनानी चाहिए। उक्त मत अनुवादक की आचार संहिता और अनुवादक के गुणों को भी रेखांकित करता है, जो अनुवाद रूपी सेतु निर्मिती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुवाद वैज्ञानिक हैलिडे ने– ''अनुवाद एक संबंध का नाम है, इस विचार को प्रस्तुत किया है। इसके अंतर्गत वे समान स्थिति में, समान प्रकार्य संपादित करनेवाले भिन्न भाषाओं के दो पाठों के बीच के संदर्भ तथा उससे अभिव्यंजित संदेश के समान होने पर बल देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलनाथ तिवारी

अनुवाद कला – डॉ. विश्वनाथ अय्यर

अनुवाद–मूल्य और मूल्यांकरन – डॉ. राशी मुदीराज

अनुवाद सिद्धांत की समस्याएँ – संपा. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव